SANJAY
STORE TEXTILES
Dara Market, Johari Bazar &
Tonk Road, Paanch Batti JAIPUR
2570847

सरकारी विज्ञापनों के लिए
मान्यता प्राप्त

If undelivered, Pl.
return to
रमन अग्रवाल (संपादक)
हैल्थ व्यू : 170/3,
रामगली, राजापार्क
जयपुर-302004
मो. 98290-66272

राष्ट्रस्तरीय पाक्षिक पत्रिका

HEALTH VIEW हैल्थव्यू

कैंसर एवं गंभीर बीमारियों की रोकथाम में प्रयासरत संस्थान

चाय, नमकीन, सुपारी, मसाले, पाउडर
इत्यादि की पैकिंग के लिए
ऑटोमेटिक पाउच पैकिंग मशीनें
सुरेंद्र कुमार एण्ड कंपनी
2368358, 2378231 मो. 9829013384
खंडेलवाल स्कूल बिल्डिंग, स्टेशन रोड, जयपुर

विशेष वार्षिक सदस्यता-500/-* सहयोग-2100*/- विशेष सहयोग 3100*/-

वर्ष 24 अंक 01 हिन्दी/अंग्रेजी पृष्ठ 4 प्रति-2 रु., जयपुर 18 फरवरी, 2025

डॉ अनिल गुप्ता

कैंसर : समय पर पहचान और सही उपचार से संभव है पूरी तरह ठीक होना

पहली बार किया गया इलाज सबसे महत्वपूर्ण होता है, इसलिए किसी भी तरह की लापरवाही घातक साबित हो सकती है।

हैल्थव्यू @ जयपुर। कैंसर को अब ला-इलाज बीमारी कहना सही नहीं है, लेकिन यह एक जटिल और गंभीर समस्या बनी हुई है। भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल के वरिष्ठ कैंसर विशेषज्ञ डॉ. अनिल गुप्ता का कहना है कि आधुनिक मेडिकल साइंस ने इस बीमारी को नियंत्रित करने में बड़ी सफलता हासिल की है। हालांकि, कई मामलों में यह मरीज के जीवन को कठिन बना सकता है।

कैंसर के प्रति जागरूकता बेहद जरूरी - हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाने का उद्देश्य लोगों को इस बीमारी के प्रति जागरूक करना और इसके बचाव व उपचार के बारे में शिक्षित करना है। अगर कैंसर का समय पर पता चल जाए, तो इसका 100त्न इलाज संभव है।

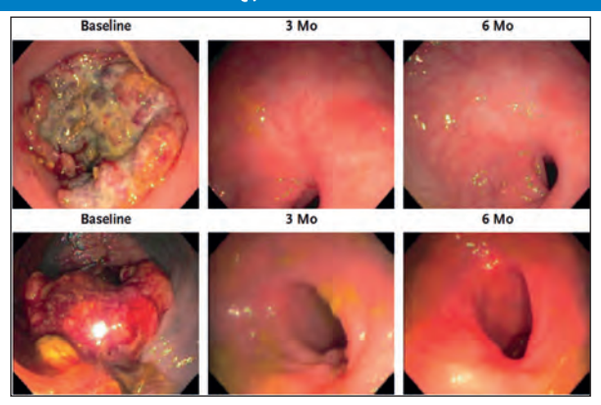

बायोप्सी = एक जरूरी जांच, न कि खतरा - आज भी कई लोग बायोप्सी टेस्ट कराने से डरते हैं, जबकि यह कैंसर की पहचान के लिए सबसे प्रभावी जांच है। यह एक गलत धारणा है कि बायोप्सी से कैंसर फैलता है। वास्तव में, बायोप्सी के बिना कैंसर का सही प्रकार और उसका उचित इलाज तय करना संभव नहीं होता।

कैंसर का सही और वैज्ञानिक इलाज - डॉ. गुप्ता बताते हैं कि कैंसर का इलाज तीन प्रमुख तरीकों से किया जाता है—

1. **कीमोथेरेपी**
2. **रेडियोथेरेपी**
3. **सर्जरी**

इन तीनों का चुनाव कैंसर की प्रकार, अवस्था और मरीज की शारीरिक स्थिति के अनुसार किया जाता है।

पहली बार किया गया इलाज सबसे महत्वपूर्ण होता है, इसलिए किसी भी तरह की लापरवाही घातक साबित हो सकती है।

नीम-हकीम और अफवाहों से बचें - कई लोग कैंसर के इलाज के नाम पर झोलाछाप डॉक्टरों और अप्रमाणित चिकित्सा पद्धतियों का सहारा लेते हैं, जिससे मरीज को गंभीर नुकसान हो सकता है। इसलिए, कैंसर के किसी भी संदेह पर केवल योग्य विशेषज्ञ डॉक्टर से परामर्श लेना चाहिए।

कैंसर की रोकथाम- सावधानी और नियमित जांच - यदि आपके परिवार में कैंसर का इतिहास है या आपको इसके लक्षण महसूस हो रहे हैं, तो साल में एक बार विशेषज्ञ से जांच अवश्य कराएं। प्रारंभिक अवस्था में कैंसर का इलाज पूरी तरह संभव होता है, बशर्ते सही समय पर सही कदम उठाए जाएं।

सकारात्मक सोच और इच्छा शक्ति जरूरी - कैंसर के इलाज के दौरान मरीज की मानसिक स्थिति भी बहुत मायने रखती है।

सकारात्मक सोच, दृढ़ निश्चय और डॉक्टर के निर्देशों का सही पालन करने से कैंसर से पूरी तरह ठीक हुआ जा सकता है।

संपर्क करें - यदि आपको कैंसर से जुड़ी कोई जानकारी चाहिए या परामर्श लेना चाहते हैं, तो आप डॉ. अनिल गुप्ता से संपर्क कर सकते हैं।

संपर्क सूत्र
डॉ. अनिल गुप्ता
मोबाइल - 9829052417

व्यक्तित्व और सुंदरता का तालमेल भी कायम करती है माइक्रोप्लाटिक सर्जरी

डॉ. जी०एस० कालरा

Hair transpllant, nose re-shaping, chin-reshaping, face lift, breast augmentation etc

हैल्थव्यू @ जयपुर। एक व्यक्ति के सिर के बाल झड़ने लगे थे, उसे लगा कि अब उसकी शादी नहीं हो पाएगी और वह डिप्रेशन में आ गया। तभी उसे किसी ने हेयर ट्रांसप्लांट करने की सलाह दी, उसने हेयर ट्रांसप्लांट करवाया और उसकी एक नई जिंदगी शुरु हुई उसकी शादी भी हुई वह बेहद खुश है।

एस एम एस मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. जी एस कालरा का कहना है कि कॉस्मिेटिक सर्जरी शरीर के अंगों को निखारने के लिए एक वरदान है बशर्ते ये सर्जरी योग्य चिकित्सकों के हाथों हो। प्लास्टिक और कॉस्मिेटिक सर्जरी के एडवांसमेंट ने लोगों की पर्सनल्टी के अंदाज ही बदल दिये, अब लोगों को बदसूरत रह कर जीवन जीने को मोहताज नहीं रहना पड़ेगा। आजकल नाक को सही शेप दी जाने लगी, फेस लिफ्ट होने लगे, चिन को शेप दी जा सकती है, आई ब्रो को फेस के अनुसार शेप दी जा सकती है।

ब्रेस्ट ऑगमेंटेशन यानि ब्रेस्ट को सही आकार व मनचाहा साइज दिया जा सकता है, उभारा जा सकता है, एक्सट्रा फैट कम की जा सकती है और ट्रांसफर की जा सकती है। शरीर पर मौजूद अतिरिक्त चर्बी को कम किया जा सकता है, तोंद को तंदुरुस्त किया जा सकता है। वेजाइना को टाइट किया जा सकता है आदि इन सब समस्याओं का समाधान दिया है प्लास्टिक एवं कॉस्मिेटिक सर्जरी ने। हमने जिन लागों को

फेशियल पैरालाइसिस हो जाता है उनके चेहरे पर मुस्कान नहीं आती थी उनके चेहरे पर फिर से मुस्कान लौटाई है, यह सब माइक्रो प्लास्टिक सर्जरी से संभव हो सका है।

संपर्क सूत्र
डॉ. जी. एस. कालरा
मो. 9829050655

बढ़ते प्रदूषण एवं बदलती जीवन शैली नाक और साइनस की एलर्जी प्रमुख समस्या

पहली बार किया गया इलाज सबसे महत्वपूर्ण होता है, इसलिए किसी भी तरह की लापरवाही घातक साबित हो सकती है।

● हैल्थ व्यू

बदलते मौसम और बढ़ते प्रदूषण के कारण चोमू और आसपास के क्षेत्रों में नाक और साइनस की एलर्जी (Chronic Rhinosinusitis) एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभर रही है। इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोग बार-बार जुकाम, छींक, नाक बंद होने, सिर दर्द और सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्याओं से परेशान हैं।

डॉ. सुधांशु अनंत पांडे

चिकित्सकीय दृष्टिकोण से समझें बीमारी - सुधांशु अनंत ई एन टी हॉस्पिटल चौमू के कान, नाक, गला एवं मुख, गला कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. सुधांशु अनंत पाण्डे के अनुसार, यह बीमारी प्रदूषण, धूल-मिट्टी, एलर्जी, कमजोर प्रतिरोधक क्षमता और जीवनशैली संबंधी कारणों से होती है। जिन लोगों के माता-पिता को यह बीमारी होती है, जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, या जो लोग स्मोकिंग करते हैं, उनमें इस बीमारी का खतरा अधिक होता है। इसके अलावा, डायबिटीज और ल्यूकेमिया जैसी बीमारियों से ग्रसित लोगों को भी यह समस्या ज्यादा होती है।

बच्चों में भी यह समस्या देखने को मिल रही है, खासकर उन बच्चों में जिनके नाक के पीछे एडिनॉइड नामक मांस बढ़ा हुआ होता है।

लक्षण और संभावित जटिलताएँ - इस बीमारी के प्रमुख लक्षणों में - नाक से लगातार पानी आना -बार-बार जुकाम और छींक आना - सांस लेने में तकलीफ -सिरदर्द और चेहरे में दर्द - गंध पहचानने में परेशानी। डॉ. पाण्डे के अनुसार, यदि इस बीमारी का सही समय पर इलाज न किया जाए, तो यह आगे चलकर अस्थमा जैसी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है। कई मरीजों में यह देखा गया है कि यदि क्रोनिक राइनोसाइनुसाइटिस का सही इलाज किया जाए तो उनका अस्थमा काफी हद तक नियंत्रित हो सकता है। **डायग्नोसिस और इलाज है जरूरी** - इस बीमारी की सटीक पहचान के लिए सही क्लिनिकल एग्जामिनेशन और आवश्यक इन्वेस्टिगेशन जरूरी होते हैं। बीमारी की गंभीरता को समझने के लिए SNOT 22 स्कोरिंग का उपयोग किया जाता है। अगर शुरुआती चरण में इस बीमारी का इलाज किया जाए, तो अधिकतर मरीजों को ऑपरेशन की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन यदि लक्षण गंभीर हो जाते हैं और दवाओं से राहत नहीं मिलती, तो सर्जरी की सलाह दी जाती है। साथ ही, जीवनशैली में सुधार, संतुलित

आहार, चिकित्सकीय परामर्श के अनुसार बचाव और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली दवाओं का सेवन भी आवश्यक होता है।

चौमू क्षेत्र में बढ़ रही समस्या - स्थानीय चिकित्सकों के अनुसार, चोमू और आसपास के क्षेत्रों में मौसम में बदलाव और बढ़ते प्रदूषण के कारण यह समस्या तेजी से बढ़ रही है।

आए दिन अस्पतालों में सर्दी-खांसी, सिरदर्द और नाक की एलर्जी से पीड़ित मरीजों की संख्या बढ़ रही है। डॉ पांडे का कहना है कि स्वच्छ पर्यावरण, नियमित व्यायाम, सही खानपान और डॉक्टर की सलाह के अनुसार दवाइयों का सेवन करके इस समस्या से बचा जा सकता है।

डॉ सुधांशु अनंत पांडे
मो. - 7976609972

स्लिप डिस्क-कमर दर्द ENDOSCOPIC MICRODISCECTOMY

ADVANCE TREATMENT

डॉ. एन सी पूनिया

कमर दर्द एक ऐसा लक्षण है जिसका सामना जीवनऐसी दिक्कत है जो 80 फीसद लोगों को जीवन में एक बार जरूर होती है। हर कमर दर्द का कारण स्लिप डिस्क नहीं होता और हर स्लिप डिस्क का इलाज ऑपरेशन नहीं होता है।

न्यूरो केयर हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ न्यूरो सर्जन डॉ एन सी पूनिया ने बताया कि जब किसी दबाव से डिस्क की गहरी झिल्ली फट जाती है या कमजोर हो जाती है तो जेलीनुमा पदार्थ निकलकर नसों पर दबाव डालता है जिसकी वजह से पैरों में दर्द या सुन्नपन होता है।

नसों पर दबाव डिस्क के अलावा अन्य ऊतकों के बढ़ने से भी होता है। उन्होंने कहा कि स्लिप डिस्क के लक्षण नस पर दबाव के आधार पर होते है। इसमें सामान्यत: कमर में दर्द होना व पैरों में दर्द या सुन्नपन होता है। बाद में पैर के अंगूठे या पंजे में कमजोरी भी आ सकती है। अगर स्पाइनल कार्ड के बीच में दबाव पड़ता है तो बैठने के स्थान पर सुन्नपन या मल-मूत्र का नियंत्रण भी प्रभावित हो सकता है। भारी सामान उठाने, ज्यादा देर खड़े होने, खांसने व छींकने से दर्द बढ़ सकता है। इसमें एमआरआई तथा कमर का एक्सरे जांच की जाती है।

उपचार - ज्यादातर मरीजों को आपरेशन की जरूरत नहीं होती है किंतु इसमें दो से तीन हफ्ते तक पूर्ण आराम करना चाहिए। दर्द निवारक दवाएं और कुशल निर्देशन में फिजियोथिरेपी होनी चाहिए। कमर में खिंचाव का बहुत अधिक महत्व नहीं है।

सावधानी - स्लिप डिस्क के मरीजों को भारी सामान नहीं उठाना चाहिए। आगे झुकना और ज्यादा व्यायाम भी नहीं करना चाहिए।

कब होती है सर्जरी - जब मेडिकल उपचार से दर्द कम न हो, पैरों में कमजोरी आ जाए और मल मूत्र का विसर्जन प्रभावित हो तथा हड्डी खिसकना, गलना अथवा स्पाइन की कोई अन्य बीमारी हो तो सर्जरी ही कारगर होती है।

उन्होंने कहा वैसे तो माइक्रोस्कोप और बिना माइक्रोस्कोप के सर्जरी होती है किंतु नईविधा के रूप में इंडोस्कोपिक माइक्रोडिसेक्टॉमी विकसित हुई है। इसमें

The surgeon only takes around 30 minutes to complete the procedure during the medical procedure. Endoscopic discectomy is among the least invasive surgical procedures for treating disc herniation

1.2 सेमी के चीरे से इंडोस्कोप की मदद से दबी हुई नस के ऊपर की हड्डी का कुछ हिस्सा व डिस्क निकाली जाती है जिससे नस का दबाव खत्म हो जाता है। आपरेशन में दूरबीन विधि से ज्यादातर मांसपेशियों और ऊतकों को नहीं निकाला जाता है इसलिए मरीज को आपरेशन के बाद रिकवरी में कम समय लगता है। मरीज को उसी दिन अथवा दूसरे दिन घर भेजा जा सकता है।

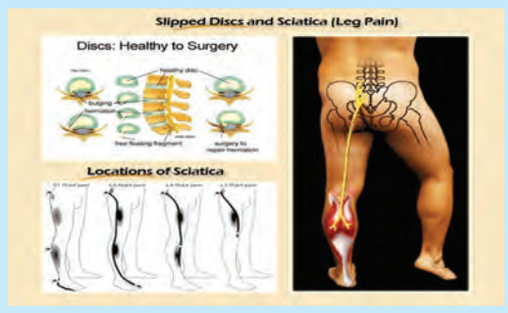

संपर्क सूत्र डॉ. एन सी पूनिया
मो 9829115233

फाइबर ऑप्टिकल क्रांति की देन

दूरबीन तकनीक में डबल बंडल तकनीक का समावेश कर लिगामेंट का रिपेयर आसान

डॉ. राजीव गुप्ता

आज की दोषपूर्ण जीवन शैली और व्यायाम में कमी व बैठने के गलत तरीके के कारण तमाम जोड़ों के दर्द के मरीजों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है, उपरोक्त विचार प्रस्तुत करते हुए आथ्रोस्कोपी एवं स्पोटर्स इंजरी सेंटर के अस्थि जोड़ रोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव गुप्ता ने कहा कि मोटर बाइक के अधिक इस्तेमाल से भी घुटने क्षतिग्रस्त देखने को मिलते है जिसमें लिगामेंट का टूटना व वाशर का फटना मुख्य है। उन्होंने कहा कि इस कारण व्यक्ति को भागने, तेजी से चलने में घुटने में लचक आती है, घुटने में दर्द होता है।

कई लोग यूं ही दर्द के साथ जीवन यापन कर रहे होते है और इनमें से अधिकतर दर्द निवारक दवाएं का सेवन कर दर्द से छुटकारा पाते है। डॉ. गुप्ता का कहना है कि दर्द निवारक दवाओं से एसिडिटी की मात्रा बढ़ जाती है और पेट में गैस व अल्सर आदि विकारों का सामना करना पड़ सकता है। पूर्व में इसका इलाज लंबे चीरे से ऑपरेशन कर लिगामेंट बनाना होता था। लेकिन अब दूरबीन तकनीक में डबल बंडल तकनीक का समावेश कर लिगामेंट बनाया जाता है औज जिसे दूरबीन द्वारा घुटने के जोड़ की दोनो हड्डियों के बीच में रोपित कर दिया जाता है। यह तकनीक फाइबर ऑप्टिकल क्रांति की देन है।

आर्थ्रोस्कोपी एक यंत्र समूह का नाम है जिसके अंतर्गत 4 मिमी का एक छोटा सा खास यंत्र होता है जिसे जांच व इलाज के दौरान एक सिरा जोड़ के अंदर डाला जाता है, दूसरा सिरा तीन भागों में बंटा होता है। एक भाग प्रकाश स्त्रोत का होता है दूसरे भाग को साफ करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है और तीसरा भाग कैमरे व कम्प्यूटर से जुड़ा होता है।

कैमरा जोड़ के अंदर की तस्वीर को कम्प्यूटर स्क्रीन पर उतारता है। यह स्क्रीन कई गुणा आवर्धित होती है। इससे चिकित्सक बारीक से बारीक व्याधि को सटीक तरीके से दुरस्त कर देते है।

संपर्क सूत्र-डॉ. राजीव गुप्ता,
मो. 94149-80697

NEURO CARE HOSPITAL
& Research Centre Pvt. Ltd
Dr. NEMI CHAND POONIA
DIRECTOR
(MBBS, MS, Mch Neuro surgery
Vision of Excelence Mission to save Lives
न्यूरो एवं स्पाइन की विश्व स्तरीय अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधा
न्यूरो एंडोस्कोपी द्वारा मस्तिष्क एवं स्पाइन के ऑपरेशन की सुविधा
14 बेड का गहन चिकित्सा इकाई, विश्व स्तरीय मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर
नसों के रास्ते दिमाग की जटिल बीमारियों का इलाज
राजस्थान में प्रथम न्यूरो नेविगेशन सिस्टम के द्वारा ऑपरेशन की सुविधा
1/611 Sector 1, Vidhyadhar Nagar Jaipur
PH: 0141-2236712, 9983300286

Manik Chand & Sons
(Jewellers) Pvt.Ltd

Platinum, Diamond, Gold,
Sliver, Pearl & Watches
Christian Basti, G.S. Road, Guwahati
Assam - Mob- 96780-68944
Email : info@mcj.net.in
Website : manikchandjewellers.com

आधुनिक लेजर नेत्र चिकित्सा में राज्य का गौरव
स्माईल लेसिक
चश्मा हटाने
का राज्य में एकमात्र स्थान
SMILE LASIK
बिना फ्लेप, बिना ब्लेड
लेजर द्वारा चश्मा हटाना,
पतले कार्निया के लिए
भी अधिक सुरक्षित
VisuMax Laser
राज्य/केन्द्र सरकार कर्मचारियों, पेन्शनर्स एवं मेडिकल के लिए अधिकृत नेत्र चिकित्सालय
डॉ.वीरेन्द्र लेजर, फेको सर्जरी सेन्टर
टोंक फाटक, फोर्ड शोरूम के पीछे,टोंक रोड़, गांधी नगर, जयपुर
9829017147, 9414043006 www.newsperfectvision.com

व्यापारिक पूछताछ आमंत्रित है
"Doctor-Driven Quality, Patient-Focused Care"
PANTOPRIME-DSR Capsule
Gutwibe
Prebiotic + Probiotic + L-Glutathione Capsules/ Sachets
CALCIBOOM
Calcium citrate 1000mg + magnesium 100mg + zinc 4mg + vitamin D3 200 I.U. Tablets
IROCRUZ-XT
Ferrous Ascorbate 100mg + Folic Acid 1.5mg + Zinc Sulphate 22.5mg TABLETS
ACOJOY-P
Aceclofenac 100mg + Paracetamol 325mg Tablet
Kanan Remedies
An ISO 9001 : 2015 Company
WHO GMP Certified Products
MUMBAI Mo. 88528-32320

उपचार से बेहतर है रोकथाम, स्वस्थ शरीर के लिए व्यायाम

"विचार"

भगवान के लिये समय नहीं!

पंकज अंबा

युगो के बटवारें के हिसाब से अब कल युग चल रहा है पर अब शायद वो भी खत्म हो चला है या नाम बदल गया है उसका कल युग कैश युग हो चला है। सब कैश के चक्कर में पड़े है। सब जगह भावनाओं को कैश किया जा रहा हैं। बेटा माँ की भावना से खेलता है क्योंकि जायदाद का मोह है। बेलगाड़ी में माता की फोटो लगाकर और बड़ी चादर फैला कर घूमने वाले मिल जायेंगे।

जो आपकी धार्मिक भावनाओं से खेलते है इनमें से शायद ही कभी कोई माता के दरबार गया हो या किसी ने अजमेर में चादर चढ़ायी है। बाबा लोग चार कदम आगे हैं, आपकी भावनाओं को इतना ज्यादा कैश करने लगे है कि कुछ तो खुद को भगवान ही घोषित कर देते हैं। इन सब से बचना ऐसा भी मत सोचना कि मैंने तो अच्छी भावना से दान किया है दान लेने वाला जो करे सो करे यह तो ऐसा हुआ कि जानते हुये भी कि सामने वाला कसाई है। आप उसको बकरा भेंट कर रहे है, गलती तुम्हारी है न कि कसाई की। हम सब आप अपने कर्मों की ही सजा भुगत रहे है चाहे वो कर्म जान कर हो या अनजाने में।

मैं आपका ध्यान एक तरफ दिलाना चाहता हूँ मेरी नजर में जो गलत हो रहा है। सुबह-सुबह मंदिर के सामने खड़े होकर देखों कितने ही लोग स्कूटर कार साइकिल वाले मिलेगें जो अपनी गाड़ी धीरे करके (गाड़ी से उतरने का टाइम नहीं है) भगवान को मथ्था टेकते हैं। 10 कदम दूर अगर घर का कोई बुजुर्ग मिल जाये तो गाड़ी रोक कर पैर छू लेंगे पर भगवान के लिये समय नहीं है। वो सामने वाला मालिक भी जब दूर से हैलो करता है तब तुम परेशान होते हो। उसको सुनाने के लिये तुमको ही समय देना होगा। मैंने कईयों से कहते सुना है कि मैं गुरू दरबार गया था वहाँ मांस, मदिरा, सिगरेट सब छोड़ आया, होना यह चाहिए था कि गुरू मैं तेरे दरबार में यह सब चीजे छोड़कर आया हूँ मुझे ताकत दो मैं सदा इन सब से दूर रहूं। 'तुम्हारा गुरू कोई कचरा पात्र नहीं है जो सब गन्दी चीजे उसके पास छोड़ देते हो।' आज के समय में किसी के पास समय नहीं है सब ठेके के काम कराना चाहते है, परेशानी तुमको है तुम्हारे घर में है, हवन करने पंडित जी आते है जिसको सिर्फ अपनी दक्षिणा से मतलब है। तुमको हवन करना नहीं आता तो क्या है मन से मालिक के सामने रो लोगे तो भी काम हो जायेगा।

संपर्क सूत्र - पंकज अम्बा मो 9829353757

सम्मोहन चिकित्सा : दर्द निवारण में एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

डॉ. राजेन्द्र धर

क्या सम्मोहन केवल जादू-टोना है? यह एक ऐसा सवाल है जो अक्सर लोगों के मन में आता है। भारत में सम्मोहन को प्राय: एक मिथक, जादू या मनोवैज्ञानिक चाल के रूप में देखा जाता है, लेकिन आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इस धारणा को तोड़ रहा है। निम्स मेडिकल कॉलेज के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र धर बताते हैं कि सम्मोहन न केवल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, बल्कि यह दर्द निवारण में भी अत्यधिक प्रभावी सिद्ध हो रहा है।

सम्मोहन और दर्द का विज्ञान- जब किसी व्यक्ति को चोट लगती है या खून बहता है, तो वह असली दर्द कम, लेकिन अपनी मानसिक प्रतिक्रिया के कारण ज्यादा दर्द महसूस करता है। यह मस्तिष्क की दर्द महसूस करने और दर्द की अपेक्षा करने वाली तंत्रिकाओं की निकटता के कारण होता है।

रात को दर्द ज्यादा क्यों लगता है ? - दिन में हमारा ध्यान कई चीजों में बंटा रहता है, लेकिन रात को ध्यान केवल चोट पर केंद्रित हो जाता है, जिससे दर्द अधिक महसूस होता है। डॉ. धर बताते हैं कि सम्मोहन तकनीक का उपयोग इन मनोवैज्ञानिक प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है, जिससे मरीज का ध्यान दर्द से हटाकर अन्य सुखद अनुभवों पर केंद्रित किया जाता है।

सम्मोहन से दर्द प्रबंधन कैसे किया जाता है?

दिमाग के दरवाजों को नियंत्रित करना - डॉ. धर बताते हैं कि दिमाग में कुछ दरवाजे दर्द के एहसास को बढ़ाते हैं और कुछ इसे कम करते हैं। सही सम्मोहन तकनीक से अनचाहे दरवाजे बंद और सही दरवाजे खोले जा सकते हैं।

दंत चिकित्सा में सफलता - चिकित्सकों ने दंत चिकित्सा में बिना एनेस्थीसिया के सम्मोहन का सफल उपयोग किया। मरीजों को किसी प्रकार का दर्द महसूस नहीं हुआ।

क्या सम्मोहन वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है ? - हालांकि मुख्यधारा के डॉक्टर सम्मोहन की विश्वसनीयता पर संदेह करते हैं, लेकिन कई वैज्ञानिक अध्ययनों और चिकित्सकीय प्रयोगों में इसकी प्रभावशीलता सिद्ध हो चुकी है। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अनुसार, सम्मोहन का उपयोग दर्द प्रबंधन, तनाव कम करने और यहां तक कि सर्जरी के दौरान भी किया जा सकता है। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल की रिपोर्ट में सम्मोहन को क्रोनिक दर्द और सर्जिकल दर्द के इलाज में प्रभावी बताया गया है।

संदेश - सम्मोहन चिकित्सा का भविष्य - सम्मोहन मनोवैज्ञानिक और न्यूरोलॉजिकल प्रक्रियाओं का उपयोग करके दर्द को नियंत्रित करने में सक्षम है। यह दवा-मुक्त, प्राकृतिक और सुरक्षित विकल्प हो सकता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जिन्हें एनेस्थीसिया से एलर्जी होती है। चिकित्सा विज्ञान को चाहिए कि वह सम्मोहन जैसी परंपरागत लेकिन वैज्ञानिक रूप से प्रभावी तकनीकों को अधिक स्वीकृति दे।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें प्रो. डॉ. राजेंद्र धर (9414073962)

दादी मां के नुस्खे

सहारा आयुर्वेदिक सेंटर के डॉ. अशोक शर्मा का कहना है कि मानव शरीर के रोगोपचार में कई बार घरेलू नुस्खे बहुत कारगर होते हैं।

करें घरेलू उपचार

दुनियाभर में वायरस से संक्रमित मरीजों की संख्या में में बहुत तेजी से इजाफा हुआ था। आगे आप सर्तक रहें इसके लिए आइए जानते हैं गले के खराश को दूर करने के लिए घरेलू उपाय-

गले में खराश के लिए नमक वाले पानी से गरारा करना बेहद फायदेमंद होता है। नमक में एंटी-बैक्टीरियल गुण होता है जो गले को अंदर से साफ करता है और उसकी सिकाई करता है, जिससे गले का दर्द भी कम होता है।

हल्दी का दूध एंटीसेप्टिक की तरह काम करता है जो गले के खराश से राहत दिलाता है। साथ ही इसे नेचुरल एंटीबायोटिक के नाम से भी जाना जाता है जो छाती के चलगम को दूर करता है।

शहद भी गले के खराश और सर्दी-जुकाम के लिए फायदेमंद होता है। इसके अलावा शहद में एंटीऑक्सीडेंट और एंटीसेप्टिक गुण होता है जो गले के खराश को दूर करता है और उससे राहत प्रदान करता है।

लहसुन में सल्फर उच्च मात्रा में मौजूद होता है, जो बैक्टीरिया को खत्म करता है। लहसुन का एक पीस गाल और दांतो के बीच दबाकर टॉफी की तरह चूसने से गले की खराश और खांसी से राहत पाई जा सकती है। इसके अलावा खांसी होने पर भी राहत दिलाता

संपर्क: डॉ. अशोक शर्मा
मो. 9314512311

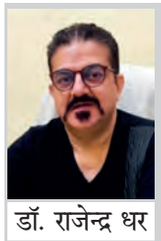

उपरोक्त नुस्खे चिकित्सक की सलाह से ही लें।

दोपहर के खाने के बाद इन कारणों से होती है एसिडिटी और ब्लोटिंग

डॉ. अरुण प्रधान

लंच के बाद अक्सर लोगों को सीने में जलन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तो, कुछ लोगों को ब्लोटिंग की समस्या हो जाती है। एसएमएस मेडिकल कॉलेज के सहायक प्रोफेसर अरुण प्रधान ने कहा कि आपने सोचा है कि ये समस्या क्यों होती है। तो, आपको यह जान कर हैरानी हो सकती है कि इन समस्याओं के पीछे कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से ज्यादातर आपके द्वारा लंच के दौरान की गई गलतियां हैं। कैसे, जानते हैं।

1. जल्दी-जल्दी लंच करने से -जल्दी-जल्दी लंच करना आपको एसिडिटी और ब्लोटिंग की समस्या दे सकता है। जी हां आपको यह जान कर हैरानी हो सकती है। लेकिन, जब आप जल्दी-जल्दी लंच करते हैं तो खाने के साथ पेट में हवा भी चली जाती है। इससे ब्लोटिंग होती है।

जब आप खाने का बड़ा-बड़ा टुकड़ा खाते हैं तो पेट इसे पचा नहीं पाता है और ज्यादा एसिड प्रड्यूस करता है। इससे एसिडिटी की समस्या होती है।

2. खाने के बीच या बाद में पानी पीना - लंच के दौरान पानी पीना आपको बीमार कर सकती है। जी हां, लंच के बीच में जब आप पानी पीते हैं तो ये पेट के डाइजेस्टिव एंजाइम्स को नुकसान पहुंचाते हैं। इससे खाना पचाना मुश्किल होता है और एसिड रिफ्लक्स की समस्या हो सकती है।

3. खाने में सब्जियों की कमी से - सब्जियों की कमी, पेट से जुड़ी समस्याओं का कारण बन सकती है। अगर आप लंच में कम सब्जियां खाते हैं तो इससे खाना पचने में समस्या होती है जिससे ब्लोटिंग व एसिडिटी की समस्या हो सकती है । दरअसल, सब्जियां फाइबर का काम करती हैं और तेजी से खाना पचाने में मदद करती हैं। लेकिन, इसकी कमी एसिडिटी का कारण बन सकती है।

4. लंच के तुरंद बाद सोने से - कुछ लोग लंच के तुरंत बाद सो जाते हैं। ये बहुत बड़ी गलती हो सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि इससे सही से खाना नहीं पच पाता है जिससे एसिडिटी और ब्लोटिंग की समस्या हो सकती है।

संपर्क सूत्र - डॉ. अरुण प्रधान
मो. 81077-85405

ISSRF 2025: राजस्थान के लिए गर्व का विषय

डॉ. बी. लाल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी ने डॉ. बी. लाल क्लिनिकल लैबोरेटरी प्रा. लि. के सहयोग से 14-16 फरवरी 2025 को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन रिप्रोडक्टिव बायोमेडिसिन÷ और 35वीं वार्षिक ढ्ढस्स्क्रस्न बैठक का आयोजन किया। इसका विषय बेसिक बायोलॉजिकल एवं एप्लाइड रिसर्च को क्लिनिकल प्रैक्टिस में एकीकृत करना - मानव कल्याण के लिए रहा।

वैज्ञानिक नवाचार और सम्मान- सम्मेलन का शुभारंभ पद्म भूषण प्रो. जी. पी. तलवार, प्रो. अल्पना काटेजा, डॉ. एम. एल. स्वरंकर, पद्म श्री डॉ. एम. एल. मदान सहित कई गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर ISSRF 2025 एब्सट्रैक्ट सॉविनियर, 33वां ISSRF न्यूज़लेटर और SHEROES कैंपेन लॉन्च किया गया। प्रजनन चिकित्सा में योगदान के लिए डॉ. नीना मल्होत्रा, डॉ. के. डी. नायर और डॉ. नरेंद्र मल्होत्रा को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

अनुसंधान और वैश्विक भागीदारी -10 वैज्ञानिक सत्र (प्रजनन कैंसर, जीनोमिक्स, पोषण, जीवनशैली)- 100+ आमंत्रित वक्ता, 110 शोध पोस्टर -अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, यूके सहित 5 देशों की भागीदारी- 3 लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड, 7 ऑनरेबल ओरशन्स, 12 यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड

राजस्थान को लाभ

-वैश्विक चिकित्सा अनुसंधान में पहचान -युवा शोधकर्ताओं के लिए अवसर - महिला स्वास्थ्य में सुधार-उद्योग और निवेश के नए अवसर

ISSRF 2025 राजस्थान को वैश्विक मेडिकल रिसर्च हब बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

बच्चों के रोग में व्याप्त भ्रांतिया और तथ्य

डॉ. गिरिश शर्मा

हमारे देश में बच्चों के रोग में भ्रांतिया व्याप्त है जिनके बारे में जानना और उसका उचित समाधान जरुरी है जिससे हम जटिलताओं से बच सकते है। इस बार भ्रांतियो जवाब दे रहे है हेल्थ हॉस्पिटल के डॉ गिरिश शर्मा।

भ्रांति- इन्हेलर देने से आदत पड़ जाती है।
तथ्य- आदत नहीं प्रभावी तरीके से रोग को काबू किया जाता है। यह एक टारेगेटेड थेरेपी है इससे अन्य अंगों को दुष्प्रभाव से बचाया जा सकता है।
भ्रांति- आंखों में काजल लगाने से ठीक रहती है।
तथ्य- आंखे ठीक नहीं खराब हो सकती है आजकल काजल की गुणवत्ता पर भरोसा नहीं और एप्लाई करना आसान नहीं संक्रमण के पूरे चांस रहते है।
भ्रांति- काजल लगाने से आंखे लंबी व कजरारी बनती है।
तथ्य- आंखे कुदरती उपहार है जो बनावट भगवान ने दी है वही रहेगी जब तक कि प्लास्टिक सर्जरी की सहायता न लें।
भ्रांति- 1-2 साल के बच्चे की समस्याओं के बारे में हर बार यह सोचना कि दांत निकल रहे है इसलिए ऐसा है।
तथ्य- नहीं हर समस्या को दांत से जोड़ना ठीक नहीं। उचित जांच व परामर्श के बाद इलाज लेना चाहिए।

भ्रांति— कानों में तेल डालने से कान बड़िया रहते है।।
तथ्य- नहीं बल्कि संक्रमण के चांस रहते है। यदि कोई मवाद वैगरह पहले से हो तो क्या होगा सोचिए ऐसा न करें।

संपर्क सूत्र डॉ. गिरिश शर्मा
मो 9214955220

बढ़ती जा रही है दांतों में सेंसिटिविटी और पेन की शिकायत

डॉ. नीलेश सिंह

दांतों में सेंसिटिविटी और पेन की शिकायत लेकर हमारे पास आधे से ज्यादा लोग थर्ड स्टेज में आते हैं थर्ड स्टेज की बीमारी दांतों की थोड़ी गंभीर बीमारी होती है ।उपरोक्त तथ्य प्रस्तुत करते हुए सतगुरु डेंटल एंड हेयर ट्रांसप्लांट क्लीनिक के वरिष्ठ दंत रोग विशेषज्ञ डॉ नीलेश सिंह ने कहा कि दांतों की सेंसटिविटी और दर्द के मुख्य कारण और बचाव व उपचार के निम्नलिखित तरीके है।

दांतों की कैविटी - दांतों की कैविटी या डेंटल कैरीज के कारण दांतों की स्थिति बिगड़ सकती है, जिससे उनकी सेंसटिविटी बढ़ सकती है। डॉ नीलेश सिंह ने कहा कि इसका मुख्य कारण गलत तकनीक से ब्रशिंग करना ज्यादा देर तक ब्रशिंग करना है, जिसकी वजह से दांत घिस जाते हैं। इसके अलावा बहुत से लोग दानेदार तंबाकू वाला दंत मंजन करते हैं जैसे निराला दंत मंजन, मुशाका गुल आदि इससे दांत खराब हो जाते हैं। उन्होंने यह सलाह दी कि दांत को सेंसटिविटी और दर्द से बचने के लिए सुबह से भी ज्यादा जरूरी है रात को ब्रश करके सोना।

उन्होंने कहा कि बार-बार मीठा नहीं खाना चाहिए। मिठास दांतो को खराब करती है। दांतों को स्वस्थ रखने के लिए फाइबर फूड लेंवे। सलाद और फ्रूट का जूस की अपेक्षाकृत डायरेक्ट सेवन करें। उन्होंने कहा कि इन उपायों को नहीं करने के बाद और करने के बाद भी भी जिन लोगों के दांतों में सेंसिटिविटी और पेन होता है उसका हमारे पास उपचार उपलब्ध है उसके लिए हम कैविटी फिलिंग करते हैं आरसीटी करते हैं। आरसीटी के बाद कैप अवश्य लगवाएं। बहुत से लोग टोपी नहीं लगवाते या लापरवाही कर जाते हैं जिससे मसाला निकल जाता है और दांतों के फ्रैक्चर होने का खतरा रहता है। उन्होंने कहा कि दातों की सुरक्षा के लिए सबसे अधिक जरूरी है।

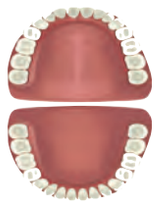

संपर्क सूत्र डॉ निलेश सिंह मो 90246 29256

JANGID HOSPITAL
Nawalgarh, Jhunjhunu Distt.
झुंझनु जिले के निवासियों की स्वास्थ्य रक्षा का प्रहरी
Dr. Manish Sharma
Consultant Anaesthesiologist & Intensivist
Mo: 9414402800, Ph: 1594-225500

Fixed Teeth only in 1 Hour
Dr. Preeti Mittal
ORAL DENTAL SURGEON
105, vrindavan vihar colony King's Road Nirman Nagar Jaipur
Mo: 9829460460

H.N. NURSING HOME
चूरू क्षेत्र का एक विश्वसनीय केन्द्र
DR. MUMTAJ ALI
Churu- Rajsthan
Mob. 9414084525
Ph: 250763

सूचना

हैल्थ व्यू में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने विचार हैं और केवल आपकी जानकारी के लिए है कोई भी लेख पर अमल करने से पूर्व अपने चिकित्सक से परामर्श अवश्य कर लें। हैल्थ व्यू के सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

THE EDITTORIAL BOARD DOES NOT ENDORSE ANY PRODUCTS ADVERTISED IN THIS NEWSPAPER.
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र केवल जयपुर होगा।

प्रत्येक अंतिम शनिवार को नि:शुल्क एक्युप्रेशर व रेकी चिकित्सा जिसमें शारीरिक, मानसिक व चर्म से संबंधी रोगों का उपचार
संपर्क सूत्र
आकृति क्लिनिक
डॉ. पमिला छाबड़ा
मो. : 9829735666
रेकी व एक्युप्रेशर प्रशिक्षण हेतु संपर्क करें

हैल्थ हंगामा

एक डॉक्टर साहब को शेरों शायरी का चस्का लग गया, धीरे-धीरे इतना बढ़ा कि वह मरीजों को हिदायतें भी शायरी की शक्ल में ही देने लगे. कुछ नमूनों पर गौर फरमाइयेगा...
दिल मेरा टूटा गया उठी जब उसकी डोली, सुबह दोपहर शाम बस एक-एक गोली

....

एक अमेरिकी डॉक्टर भारत आया, बस स्टैंड पर एक किताब देखते ही उसे दिल का दौरा पड़ गया। बीस रुपए की इस किताब को नाम था तीस दिन में डॉक्टर कैसे बनें।

....

आपने कभी सोचा है ? अस्पताल में ऑपरेशन से पहले मरीज को बेहोश क्यूं किया जाता है? अगर बेहोश नहीं किया और मरीज ऑपरेशन करना सीख गया तो डॉक्टरों को कौन पूछेगा।

....

डॉक्टर ने महिला के मुंह में थर्मामीटर रख कर कुछ देर मुंह बन्द रखने को कहा...
पत्नी को खामोश देख कर पति ने पूछा...डॉक्टर साहब...
ये जादुई चीज कितने की आती है?

जयपुर में आयोजित 42वीं ईएनटी डॉक्टर्स कॉन्फ्रेंस में विशेषज्ञों ने किए महत्वपूर्ण विचार-विमर्श

हैल्थव्यू @ जयपुर। राजस्थान ईएनटी डॉक्टर्स की 42वीं कॉन्फ्रेंस का भव्य आयोजन जयपुर में हुआ, जिसमें देशभर के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने भाग लिया। कॉन्फ्रेंस से पहले आञ्जनेय ईएनटी हॉस्पिटल, सी-स्कीम में एक विशेष लाइव सर्जरी वर्कशॉप आयोजित की गई, जहां युवा चिकित्सकों ने देश के जाने-माने ईएनटी विशेषज्ञों से सर्जरी की बारीकियां सीखीं।

कॉन्फ्रेंस के आयोजन सचिव डॉ. अंजनी कुमार शर्मा ने बताया कि 8 और 9 फरवरी को ऋद्धष्ट, जयपुर में आयोजित इस कार्यशाला में 800 से अधिक ईएनटी डॉक्टर्स ने भाग लिया और चिकित्सा जगत की बेहतरी के लिए अपने विचार साझा किए।

इस अवसर पर डॉ मानप्रकाश शर्मा ने आने वाली पीढ़ी को चेतावनी दी कि अपने कानों की श्रवण क्षमता को बचाना है तो इयर फोन पर क्षमता से अधिक ध्वनि का इस्तेमाल न करें। नाक की हड्डी और ट्यूमर विषय पर बिना चीर-फाड़ के दूरबीन द्वारा ट्यूमर हटाने की नवीनतम विधियां पर प्रकाश डाला गया। थायरॉइड सर्जरी पर डॉ. अंजनी कुमार शर्मा ने नए अपडेट साझा किए।

डॉ देव पिंगोलिया ने कहा कि तेज बजने वाले लाउडस्पीकरों के आसपास ज्यादा देर ना रहे।
डॉ सुरेंद्र काला ने कहा कि मोबाइल को घंटों कान पर लगाए रखना भी कान की श्रवण क्षमता को प्रभावित करता है।
डॉ एस बी अग्रवाल ने कहा कि कानों में अनावश्यक मैल निकालने की प्रवृत्ति को त्यागे और कान और नाक को हाइजीनिक रखें। इससे कान नाक की बीमारियों से बचा जा सकता है
इस कॉन्फ्रेंस में देशभर के प्रतिष्ठित ईएनटी विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यान दिए -
डॉ. सतीश जैन ने क्रॉनिक राइनो साइनसाइटिस और प्रेसीजन मेडिसिन की भूमिका,
डॉ. अनिता भंडारी ने वर्टिगो और डिज़ीनेस के डायग्नोसिस और प्रबंधन पर, ग्रॉमस ट्यूमर विषय पर कान की नस में बनने वाले ट्यूमर का सर्जिकल ट्रीटमेंट और कैंसर से बचाव की तकनीकों पर जानकारी दी।

एक बहुत अच्छी बात

जब मेरी मृत्यु होगी तो आप मेरे रिश्तेदारों से मिलने आएंगे, मेरे बारे में बात करेंगे, कुछ अफसोस करेंगे तो कुछ कहेंगे अच्छा हुआ चला गया, हम पर बोझ था। और मुझे पता भी नहीं चलेगा, तो अभी आ जाओ ना मुझ से मिलने। जब मेरी मृत्यु होगी, तो आप मेरे सारे गुनाह माफ कर देंगे, जिसका मुझे पता भी नहीं चलेगा, तो आज ही माफ कर दो ना।

ASHOKA FURNISHINGS
31, Sarawgi Mansion, M.I. Road, Jaipur,
Tel - 0141-2576526/2572505

LIFE SAVER
A SHOP OF LIFE SAVING DRUGS
STOCKISTS FOR
Cancer & Cardiac Medicines, Disposable Surgery Items Nutrition Fluids
168, Nehru Bazar, JAIPUR
TelÑ 2313129, 2310483, 2313281, MobÑ 98290-14267
DELIVERY FACILITY AVAILABLE

MAHAVEER DIAGNOSTIC
Super Speciality Lab
Thyroid ❖ Harmones ❖Tumour Markers ❖ Infertility/ Pregnency Hormones❖ Torch ❖ Metabolic Hormones ❖ Druf Assays
Dr. Manoj Jain
Mob. 94144-60959
ECHO & COLOR DOPPLER CENTRE
Whole Body Color Doppler Study, 2 D Echo- Adult & Paediatric, Carotid Doppler, Peripheral & Renal Doppler, Small Parts - Penile Doppler, Fetal Doppler & Echo
Manav Ashram, Gopalpura Mod, Jaipur Ph: 2704787

रुलाती महंगाई

संपादकीय

सांख्यिकी विभाग ने कुछ दिन पहले खुदरा महंगाई के आंकड़े जारी कर दिए। इस साल जनवरी में खुदरा महंगाई छह दशमलव एक फीसद पर पहुंच गई। यह पिछले सात महीने में सबसे ज्यादा है। चिंता की बात ज्यादा इसलिए भी है कि महंगाई रिजर्व बैंक के निर्धारित दो से छह फीसद के दायरे से ऊपर निकल गई है। अगर महंगाई इस दायरे में रहती है तो केंद्रीय बैंक के लिए यह समस्या नहीं बनती, पर इस दायरे से बाहर जाने के बाद महंगाई बड़ा संकट बन जाती है। हालांकि रिजर्व बैंक पहले से ही संकेत देता रहा है कि महंगाई से राहत के फिलहाल आसार हैं नहीं। इस महीने मौद्रिक नीति समिति ने भी नीतिगत दरों में कोई बदलाव नहीं करके यह साफ कर दिया कि वह अभी कोई जोखिम लेने की स्थिति में नहीं है। नीतिगत दरें बढ़ाने का असर महंगाई और बढ़ने के रूप में सामने आता। और बात खुदरा महंगाई तक ही सीमित नहीं है, थोक महंगाई की दर भी पिछले दस महीने से दो अंकों में बनी हुई है। ताजा आंकड़े बताते हैं कि जनवरी में महंगाई बढ़ने का कारण खाने-पीने की चीजों के दाम बढ़ना रहा। जनवरी में खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर 10.33 फीसद पर पहुंच गई, जबकि दिसंबर-2021 में यह 9.56 फीसद थी। जनवरी में सब्जियों के दाम पैंतीस फीसद से ज्यादा बढ़ गए, जबकि दिसंबर में यह आंकड़ा साढ़े इकतीस फीसद था। अनाज, दालें और धान भी महंगे हुए। यानी उन चीजों के दाम तेजी से बढ़ रहे हैं जो आम आदमी के रोजमर्रा के इस्तेमाल की हैं। सवाल है कि अगर खाने-पीने की चीजें इसी तरह महंगी होती रहीं तो आम आदमी का गुजारा कैसे चलेगा, वह भी उस हालत में जब देश महंगाई के साथ बेरोजगारी जैसे संकट से भी जूझ रहा हो।

केंद्र और राज्य सरकारें भले ही दावा करती रहें कि लोगों को बड़े पैमाने पर रोजगार मुहैया करवाया जा रहा है, पर हकीकत तो किसी से छिपी नहीं है। ऐसे में महंगाई और ज्यादा तकलीफदेह बनती जा रही है। रसोई गैस सिलेंडरों के दाम से लेकर पेट्रोल-डीजल तक के दाम जिस स्तर पर बने हुए हैं, वे भी आग में घी का काम कर रहे हैं। लंबे समय से महंगाई का जो रुख बना हुआ है, उसे कहीं से भी अच्छा संकेत नहीं माना जा सकता, मध्यवर्ग और गरीब तबके के लिए तो खासतौर से। पिछले दो साल में देश के चौरासी फीसद परिवारों की आमद में खासी गिरावट आई है। साफ है, लोगों के पास पैसा ही नहीं है खर्च करने को। जिनके पास बचा-खुचा होगा भी, तो वे भी भविष्य के खौफ को लेकर खर्च करने से बच रहे हैं। ऐसा भी नहीं कि सिर्फ खाने-पीने की चीजें ही महंगी हो रही हैं, कपड़े, ईंधन, बिजली, परिवहन क्षेत्र तक में दाम थमने का नाम नहीं ले रहे।

दंत क्लिनिक पर छापा, उपकरण जब्त, थमाया नोटिस

हनुमानगढ़ चिकित्सा विभाग की टीम ने रावतसर तथा हनुमानगढ़ में दो अलग कार्रवाई कर कथित दंत क्लिनिक से उपकरण जब्त किए। संचालक को नोटिस जारी किया गया। वहीं हनुमानगढ़ में दो मिठाई विक्रेताओं के पास पैकेजिंग लाइसेंस नहीं होने के कारण उन पर जुर्माना लगाया गया।

टीम ने गुरुवार को रावतसर में सीएमएचओ डॉ. नवनीत शर्मा के नेतृत्व में कथित दंत चिकित्सक पर कार्रवाई कर उपकरण जब्त किए। शिकायत के आधार पर बाबा रामदेव रोड स्थित जलंधरा दांतों का अस्पताल पर कार्रवाई करते हुए कथित चिकित्सक राजकुमार जलंधरा को नोटिस थमाया गया।

साथ ही उसके पास मौजूद चिकित्सा उपकरण जब्त कर रावतसर थाना पुलिस को सौंप दिए गए। कार्यवाही में शामिल बीसीएमओ डॉ. संजीव चौधरी ने बताया कि क्लिनिक संचालक फर्जी चिकित्सक है। वह दसवीं तक भी शिक्षित नहीं है और मौके पर नशा किया हुआ मिला। आगे की कार्रवाई के लिए चिकित्सक का मेडिकल मुआयना करवाकर पुलिस थाने में उसके विरुद्ध मुकदमा दर्ज करवाया जाएगा। कार्रवाई में तहसीलदार उमा मित्तल और पुलिस टीम भी शामिल रही। सीएमएचओ डॉ. नवनीत शर्मा ने बताया कि खाद्य सामग्री का निर्माण एवं विक्रय करने वाले संस्थानों का निरीक्षण करने वाले दल में खाद्य सुरक्षा अधिकारी जीतसिंह यादव, लीगर मैट्रोलोजिकल ऑफिसर दीपक जैन एवं तकनीशियन दिलीप सिंह शामिल रहे। जंक्शन स्थित दो मिष्ठान विक्रेताओं के यहां से मीठा मावा के दो सैंपल भरे गए।

इस दौरान 10 किलो दूषित एवं बदबूदार गुलाब जामुन नष्ट कराए गए। इसके अलावा दीपक जैन ने जंक्शन स्थित मीनाक्षी स्वीट कॉर्नर एवं अशोका स्वीट्स पर जांच कर सामग्री तौल उपकरण की जांच की। मीनाक्षी स्वीट्स पर वजन तौलने की मशीन का प्रमाणीकरण नहीं होने पर दो हजार रुपए की पैनल्टी लगाई गई। इसके अलावा दोनों संस्थानों पर पैकेजिंग लाइसेंस नहीं होने पर सात-सात हजार रुपए की पैनल्टी और लगाई गई। संग्रहित किए गए सैम्पल को जांच के लिए खाद्य प्रयोगशाला भिजवा दिया गया है।

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया।

सोच बदलनी होगी यह कहावत शाश्वत सत्य है। सभी सुखी हों सभी रोग मुक्त रहें हम सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बने और किसी को भी दुख का भागी न बनना पड़े।

सोच बदलनी होगी

श्रंखला 68

डॉ मान सिंह भांवरिया

ॐ

शांति शांति शांति

इसका उच्चारण करके देखो कितनी शांति प्राप्त होगी। आज हम इस मुहावरे के अनुसार आपको जीवन जीने के तरीके के बारे में बताएंगे। हम जिस आपाधापी और भागदौड़ वाली जिंदगी में जीवन यापन कर रहे हैं सोच बदलनी होगी। कुछ बिंदुओं के द्वारा हमने जीवन को सही मार्ग पर लाने के लिए समझाने की कोशिश की है।

वैलेंटाइन डे : प्रेम का सही अर्थ समझने की जरूरत

आज की युवा पीढ़ी जिस तरह से वैलेंटाइन डे को मना रही है, वह कहीं न कहीं हमारी संस्कृति और संस्कारों में गिरावट का संकेत है। प्रेम के इस पर्व को नशे और भौतिक सुखों में डूबकर मनाना निश्चित रूप से चिंता का विषय है।

प्रेम - केवल वासना नहीं, बल्कि वात्सल्य और सम्मान भी

वैलेंटाइन डे का असली अर्थ और महत्व तब ही सार्थक होगा, जब हम इसे संस्कारों, स्नेह और सकारात्मकता के साथ मनाएं। यह सिर्फ एक प्रेमी-प्रेमिका तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें इसे अपने माता-पिता, भाई-बहन, दोस्तों और परिवार के प्रति प्रेम जताने का अवसर बनाना चाहिए।

प्रेम को सार्थक बनाएं

- नशे और अनैतिक गतिविधियों से दूर रहकर इस दिन को मनाएं।
- अपने माता-पिता, भाई-बहन, जीवनसाथी और मित्रों के साथ प्रेम और सम्मान व्यक्त करें।
- सेवा, स्नेह और समर्पण का भाव अपनाएं।
- प्रेम का अर्थ केवल शारीरिक आकर्षण नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों का सम्मान भी है।

वैलेंटाइन डे - एक नई परिभाषा की ओर

यदि हमें वास्तव में प्रेम को शुद्ध और सार्थक रूप देना है, तो हमें अपनी सोच और दृष्टिकोण बदलना होगा। वैलेंटाइन डे केवल पश्चिमी दिखावे और व्यर्थ के उत्सव का नाम नहीं है, बल्कि यह अवसर है सच्चे प्रेम और मानवीय मूल्यों को अपनाने का। आइए, इस दिन को सकारात्मक ऊर्जा, वात्सल्य और स्नेह के साथ मनाएं और समाज में एक नई सोच को बढ़ावा दें।

संपर्क सूत्र
डॉक्टर मान सिंह भांवरिया
मो +91 967277773

दिल्ली की फर्म को नकली दवा बेचने पर छापा

दिल्ली की फर्म को विटामिन डी की नकली दवा बेचने पर औषधि विभाग की टीम ने फव्वारा दवा बाजार में छापा मारा। मंगलवार देर रात तक चली कार्रवाई के बाद माधव फार्मा को सील कर दिया गया। एक दवा का सैंपल लिया गया और चार थोक दवा कारोबारियों को नोटिस दिए गए। दिल्ली में औषधि विभाग की टीम ने बायो डी थ्री प्लस (विटामिन डी) और बायो डी थ्री फेम (विटामिन डी और कैल्शियम) कैप्सूल के सैंपल लिए थे। जांच में बायो डी थ्री प्लस नकली और बायो डी थ्री फेम कैप्सूल सब स्टेंडर्ड मिला। औषधि निरीक्षक राजकुमार शर्मा ने बताया कि औषधि विभाग, दिल्ली की जांच में सामने आया कि ये दोनों दवाएं यहां के दवा बाजार फव्वारा से खरीदी गई हैं। दवा निर्माता कंपनी मेकलेयाड फार्मास्यूटिकल लिमिटेड ने दोनों दवाएं डुप्लीकेट होने की जानकारी दी। औषधि विभाग, दिल्ली की टीम के साथ स्थानीय टीम ने फव्वारा स्थित हे मां मेडिकल स्टोर, महावीर ड्रग हाउस, माधव ड्रग हाउस और बंसल ड्रग हाउस पर छापा मारा। यहां से बायो डी थ्री फेम कैप्सूल के सैंपल लिए गए। पूछताछ में सामने आया कि इन चारों फर्मों ने माधव फार्मा, कंचन मार्केट, फव्वारा से दोनों दवा खरीदी थी। माधव फार्मा पर टीम पहुंची तो वहां ताला लगा हुआ था। संचालक मोहित कुमार को फोन किया गया, लेकिन वे नहीं आए। इस पर माधव फार्मा को सील कर दिया गया। चारों फर्मों के संचालकों को दिन में दोनों दवाओं की खरीद-बिक्री का ब्योरा देने के लिए नोटिस दिए गए। टीम में दिल्ली के औषधि निरीक्षक संदीप शर्मा, कृष्ण कुमार, स्थानीय औषधि निरीक्षक कपिल शर्मा, उर्मिला आदि शामिल रहीं। फिर शुरू हो गया नकली दवा का अवैध धंधा औषधि विभाग की टीम ने छह महीने से कोई कार्रवाई नहीं की है। फव्वारा दवा बाजार से दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, बिहार सहित 10 राज्यों में अवैध तरीके से दवाओं की आपूर्ति की जा रही है।

भारी मात्रा में नकली दवाएं बरामद

जैनपुरा जिले में दो स्थानों पर हुई छापेमारी में भारी मात्रा में नकली दवाएं बरामद हुई हैं। टीम ने मानक के विपरीत व नकली के संदेह पर आठ दवाओं का नमूना जांच के लिए भेजा है। दो आरोपितों के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कर एक को मौके से ही गिरफ्तार कर लिया गया है। यह कार्रवाई खाद्य सुरक्षा व औषधि प्रशासन (एफडीए) और पुलिस की संयुक्त टीम ने दो दिन के अभियान में की है। पकड़ी गई दवाओं की कीमत सात लाख रुपये से अधिक बताई जा रही है। जनपद में नकली व मानकविहीन दवाओं की बिक्री की सूचना पर खाद्य सुरक्षा व औषधि विभाग की टीम सक्रिय हो गई थी। सूचना पर औषधि निरीक्षक चंद्रेश दुबे व थानाध्यक्ष रामपुर ओम नारायण सिंह के नेतृत्व में संयुक्त टीम ने रामपुर बाजार में दवाएं लेकर जा रहे एक व्यक्ति को पकड़ा। तलाशी के दौरान उसके पास से पूर्व में पकड़ी गई नकली दवा के बैच की एंटीबायोटिक दवा के साथ ही अन्य दवाएं पकड़ी गईं।

पूछताछ में आरोपित ने अपना नाम संदीप दीक्षित निवासी भानापुर रामपुर बताया। आरोपित के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कर चालान न्यायालय भेज दिया गया। दो बोरियों में पकड़ी गईं दवाओं की कीमत लगभग दो लाख बताई जा रही है। पकड़े गए आरोपित की निशानदेही शनिवार को दो और स्थानों पर सघन छापेमारी की गई। टीम ने नेवढ़िया थाना क्षेत्र के भवानीगंज बाजार स्थित दो दुकानों से अधोमानक के संदेह पर छह दवाओं का नमूना लिया। वहीं जलालपुर थाना क्षेत्र के बीबनमऊ गांव निवासी आरोपित अच्छे लाल नाविक के घर व दुकान से तीन बोरी नकली व अन्य दवाएं बरामद की गईं। पकड़ी गई दवाओं की कीमत लगभग पांच लाख रुपये बताई जा रही है।

इंजेक्शन लगाने से महिला की मौत, नीम हकीम फरार

बाड़मेर जिले के चौहटन कस्बे में प्राइवेट क्लिनिक पर एक महिला को गलत इंजेक्शन लगाने से मौत का मामला सामने आया है। परिजनों का आरोप है कि महिला सामान्य बीमारी थी। इलाज के लिए नीम हकीम के पास गई और गलत इंजेक्शन लगाने से उसकी मौत हो गई। परिजनों के विरोध के बाद नीम हकीम वहां से फरार हो गया। पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की टीम ने प्राइवेट क्लिनिक को सीज कर लिया है। वही, मृतक महिला के परिजन व समाज के लोग मोर्चरी के बाहर नीम हकीम की गिरफ्तारी को लेकर धरने पर बैठ गए है।

मिली जानकारी के मुताबिक चौहटन कस्बे में बंगाली क्लिनिक नाम से संचालित हो रहा था। कोठे का तला घोनिया निवासी सुगनीदेवी पत्नी बांकाराम उपचार के बंगाली क्लिनिक पहुंची। वहां पर नीम हकीम ने एक इंजेक्शन लगाया तो महिला की मौत हो गई। मौत के बाद क्लिनिक संचालक नीम हकीम मौके से फरार हो गया। सूचना मिलने पर पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की टीम मौके पर पहुंची। उसका बाद मृतका शव चौहटन अस्पताल में रखवाया गया। पुलिस के अनुसार स्वास्थ्य विभाग की टीम के साथ पहुंच कर प्राइवेट क्लिनिक को सीज कर दिया है। क्लिनिक संचालक की तलाश की जा रही है।

चौहटन पुलिस सुभान अली का कहना है कि परिजनों ने गलत इंजेक्शन से मौत की रिपोर्ट दी है। मामला दर्ज कर रहे है। चौहटन के पूर्व विधायक तरुण राय कागा का कहना है कि गलत इंजेक्शन लगाने से महिला की मौत हुई है। इसके बाद से नीम हकीम वहां से फरार हो गया। हमारी एक ही मांग है कि नीम हकीम को गिरफ्तार किया जाए। धरने पर मृतक के परिजन व समाज के कई लोग बैठे गए है। पुलिस व प्रशासन परिजन व लोगों से वार्ता कर समझाने का प्रयास कर रहे है, लेकिन, परिजन गिरफ्तारी की मांग पर अड़े है।

कई सालों से चला रहा था क्लिनिक - मिली जानकारी के मुताबिक पश्चिमी बंगाल रबिंद्र नाथ सरकार पुत्र मनो रंजन सरकार कस्बे में बीते दो साल से क्लिनिक चला रहा है। शनिवार को महिला की मौत के बाद क्लिनिक संचालक फरार हो गया है। परिजन अब चौहटन मोर्चरी के बाहर धरने पर बैठ गए है और नीम हकीम को गिरफ्तार करने की मांग कर रहा है।

मरीजों की जिदंगी के साथ खिलवाड अस्पताल में दी जा रहीं एक्सपाइरी दवाएं

वाराणसी - जिला अस्पताल में मरीजों के स्वास्थ्य के साथ किस तरह मजाक किया जा रहा है इसका सबूत शनिवार को फिर सामने आया जब एक्सपायरी दवा से इलाज करने की जानकारी हुई। हालांकि जानकारी होने पर सीएमएस ने अस्पताल में एक्सपायर दवा को हटाने का निर्देश जारी किया।

जिला अस्पताल में रखी बीटाडीन की एक्सपायर दवा का वीडियो बनाकर किसी ने वायरल कर दिया। इमरजेंसी और आपरेशन वार्ड में उपयोग किए जा रहे बीटाडीन की शीशी पर एक्सपायरी तिथि 10 अक्तूबर 2021 अंकित किया गया है। इसकी जानकारी जब भर्ती मरीजों को इसकी भनक लगी तो लोग हंगामा करने लगे। इसकी जानकारी होते ही सीएमएस ने आनन-फानन में अस्पताल से बीटाडीन की सभी शिशियों को हटवा दिया। हालांकि एक तरफ कायाकल्प टीम अस्पताल का निरीक्षण कर रही है।

एक्सपायर मेडिकल सिरप को फेंकने की बजाय इन तरीकों से करें इस्तेमाल

मेडिकल सिरप का उपयोग बीमारियों को ठीक करने और सेहतमंद रहने के लिए खूब किया जाता है, लेकिन कई बार इसे उपयोग करने से पहले ही वे एक्सपायर हो जाते हैं। ऐसे में इसे फेंकने से पहले हमें इसका ठीक से उपयोग करना चाहिए। मेडिकल सिरप का उपयोग न केवल रोग का इलाज करने में किया जाता है, बल्कि अगर ये एक्सपायर हो जाए तो इसे घरेलू सफाई में भी इस्तेमाल कर सकते हैं। किसी भी काम में उपयोग करने से पहले सिरप की क्वालिटी चेक कर लें। अगर सिरप में कोई बदलाव होता है, जैसे कि रंग, स्वाद या गंध में तो उसका उपयोग न करें. समय समय पर अगर सिरप में थोड़ी सी गाढ़ाई होती है, तो आप इसे फेंकने के बजाय उसका उपयोग घरेलू साफ-सफाई में कर सकते हैं। यह जैसे कि बाथरूम या किचन की सफाई, गार्डनिंग में उपयोगी हो सकता ह। तो चलिए जानते हैं कि इसका दोबारा अन्य कामों में कैसे इस्तेमाल करें।

फूलवाले पौधों के लिए- कई बार हमें पौधों को पोषण देने की जरूरत होती है, जिसे आप मेडिकल सिरप की मदद से पूरा कर सकते हैं। कम मात्रा में मेडिकल सिरप को पानी में मिलाकर पौधों को पोषण देने का काम किया जा सकता है।

सफाई - कई सिरप का उपयोग घरेलू उपयोगों के लिए भी किया जा सकता है, जैसे कि कैसीटील सिरप को किचन के बर्तनों को साफ करने में उपयोग किया जा सकता है।

किचन की सफाई - मेडिकल सिरप का इस्तेमाल किचन को साफ करने के लिए भी उपयोग किया जा सकता है, जिसमें किचन की दीवारें और अन्य चीजें हो सकती हैं।

एपिलेप्सी: एक जागरूक समाज और आधुनिक चिकित्सा की भूमिका

आधुनिक चिकित्सा में एपिलेप्सी के इलाज के लिए कई उन्नत तकनीकें उपलब्ध

डॉ. आरके सुरेका

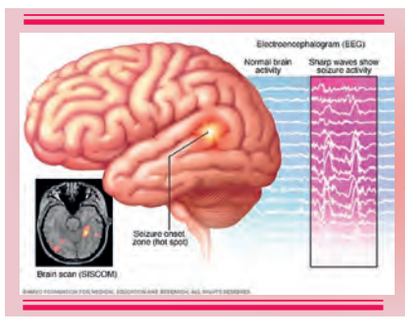

एपिलेप्सी एक न्यूरोलॉजिकल विकार है, जिसमें मस्तिष्क की असामान्य विद्युत गतिविधि के कारण दौरे (मिर्गी के झटके) आते हैं।

हैल्थव्यू। एसएमएस मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर डॉक्टर आरके सुरेका का कहना है कि एपिलेप्सी एक न्यूरोलॉजिकल विकार है, जिसमें मस्तिष्क की असामान्य विद्युत गतिविधि के कारण दौरे (मिर्गी के झटके) आते हैं। यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है और इसके कारणों में अनुवांशिकता, सिर की चोट, संक्रमण, या मस्तिष्क की संरचनात्मक असमानताएँ शामिल हो सकती हैं। आधुनिक चिकित्सा में एपिलेप्सी के इलाज के लिए कई उन्नत तकनीकें उपलब्ध हैं। दवाओं के रूप में एंटी-एपिलेप्टिक ड्रग्स का उपयोग किया जाता है, जो दौरे को नियंत्रित करने में प्रभावी होती हैं। इसके अलावा, वीगस नर्व स्टिमुलेशन , डीप ब्रेन स्टिमुलेशन और कीटोजेनिक डाइट जैसी विधियाँ भी लाभकारी हैं। गंभीर मामलों में सर्जरी भी एक प्रभावी समाधान हो सकती है।

समाज की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जागरूकता बढ़ाने, मिथकों को तोड़ने और एपिलेप्सी रोगियों के प्रति सहानुभूति रखने की आवश्यकता है। लोगों को यह समझना चाहिए कि यह रोग संक्रामक नहीं है और सही उपचार से मरीज सामान्य जीवन जी सकते हैं।

चिकित्सकों की भूमिका इसमें निर्णायक होती है। वे न केवल रोग की पहचान और उपचार करते हैं, बल्कि रोगियों और उनके परिवारों को मानसिक समर्थन भी देते हैं। एपिलेप्सी दिवस पर हम सभी को इस विषय पर जागरूकता बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए।

संपर्क सूत्र
डॉक्टर आरके सुरेका
मो - 9829275749

एंटीबायोटिक रैजिस्टैंस का बढ़ता खतरा

यदि आपके बीमार होने पर एंटीबायोटिक असर नहीं करती है तो इसका दोष जानवारों से प्राप्त खाद्य पदार्थों दूध अण्डा, चिकन मांस आदि का है। सरकार इन सब खाद्या पदार्थों से इंसानों में एंटीबायोटिक रैजिस्टैंस का खतारा उत्पन्न होने के बाद अब जागृत हुई है। फूड सेफ्टी एण्ड स्टैण्डर्ड ऑथरिटी ऑफ इंडिया (एफ एस एस ए आई) ने पशुओं से उत्पन्न होने वाले खाद्य पदार्थों में एंटी बायोटिक्स तथा फार्माकोलॉजिकली से सक्रिय पदाथ की निर्धारित मात्रा कितनी होनी चाहिए।

इससे संबंधित गजट नोटिफिकेशन को मसौदा इस सप्ताह के प्रारंभ में जारी किया है सरकार ने इस विषय परसभी हिधारकों से 30 दिनों में सुझाव आमंत्रित किए हैं। हर कोई इस बात को लेकर केवल अनुमान ही लगा रहा है कि एफ एस एस ए आई के पास कर्मचारियों की कमी है इसलिए वह कब तक इस नोटिफिकेशन को लागू करने में सक्षम होगा ताकि वह हमें बचाने के लिए वास्तविक रुप से एंटीबायोटिक रैंजिस्टैंस की प्रवृत्ति हर दिन बढ़ती ही जा रही है। इस मामले पर दिल्ली की

सेन्टर फॉर साइंस एण्ड एनवायनमेंट (सी एस ई) की चेतावनी पर एफ एस एस ए आई ने शीघ्र कार्यवाही शुरु कर दी है। सी एए ई खुलासा किया है कि किस तरह से वैश्विक फॉस्ट फूड चेन जैसे मैकडानाल्ड तथा के एफ सी इत्यादि चिकन में एंटीबॉयोटिक के दुरुपयोग का शोर मचा रही है ये चेन यू एस, रुस, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और यहां तक कि ब्राजील में एंटीबॉयोटिक का प्रयोग समाप्त करने के बावजूद भी इसका प्रयोग कर रही है। स्वास्थ्य मंत्रालय के एक अधिकारी, जिसके अधीन एफ एस एस ए आई कार्य करती है ने बताया कि एंटीबायोटिक्स तथा फार्माकोलॉजिकली सक्रिय करने के लिए पड़ती है।

जबकि इनके अवशेष जानवारों के दूध तथा खाद्य पदार्थों में उस समय तक विद्यमान रहते हैं जब तक इन्हें नियंत्रित नहीं किया जाता है तथा इन पदार्थों का उपयोग करने से लोगों में एंटीबायोटिक रैजिस्टैंस विकसित हो रहा है यह नई औषधियों के विकास की अपेक्षा तेज गति से बढ़ रहा है।

यह भी कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जानवरों से उत्पन्न होने वाले खाद्य-पदार्थों में एंटीबॉयोटिक व फर्मालोजिकली एक्टिव सब्सटेंस को निषेध किया गया है ऐसे खाद्य पदार्थों में मछलिया तथा मछलियों के उत्पाद भी सम्मिलित हैं।

!! ॐ धन्वन्तरये नमः !!
NIRAMAYA HOSPITAL
आयुर्वेद एवं पंचकर्म सेन्टर
सुविधाऐं :-
- पंचकर्म-वमन,विरेचन,बस्ती,नस्य,रक्तमोक्षण
- अभ्यंग-स्वेदन,शिरोधारा,कटि बस्त,जानू बस्ती,हृद्य बस्ती अग्निकर्म,जलोका,कपिग थैरेपी
- आयुर्वेदिक न्यूरोपैथी-हड्डी एवं जोड़ों से सम्बन्धित रोगों में

नोट : पंचकर्म मेंबरशिप कार्ड सुविधा लेने पर विशेष छूट का लाभ लेवे ।
विद्याग्राम रोड़,राधास्वामी बाग,चौमूँ ,जयपुर मो. 9414609980

ASHOKA FURNISHINGS
G.S Road, Guwahati-5,
Tel - 0361-2457801-02,
Babu Bazaar, Fancy Bazaar Guwahati1
0361-2637326

विज्ञापन के लिए संपर्क करें
मो- 9829066272

महत्वपूर्ण सूचना
बिना रसीद के किसी प्रतिनिधी को राशि ना देवें और रसीद को निम्न व्हाट्सएप्प नंबर पर 9829066272 पर भेज देवें।
आज्ञा से - प्रबन्धक - हैल्थ व्यू

जय हैल्थ एण्ड जनरल हॉस्पिटल
राशि आयुर्वेदा एवं वेलनेस सेन्टर
कांस्य थाली उपचार पद्धति के प्रसिद्द वैद्य
निदेशक
वैद्य रामनारायण मारवाल
बस स्टेण्ड, खोराश्याम दास, जयपुर मो. 9829489808

VELYS रोबोटिक प्रणाली : जोड़ों के प्रतिस्थापन में क्रांति

डॉ आर. पी. सैनी

डॉ. ओजस सैनी

VELYS प्रणाली के साथ धन्वंतरि अस्पताल ने ऑर्थोपेडिक उपचार में एक नया अध्याय शुरू किया है। यह उन्नत तकनीक राजस्थान के मरीजों को विश्वस्तरीय चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने में मदद करेगी।

हैल्थव्यू। धन्वंतरि अस्पताल ने आधुनिक चिकित्सा की दिशा में एक और बड़ा कदम उठाते हुए VELYS रोबोटिक प्रणाली को अपनाया है। यह अत्याधुनिक yth-Generation ऑर्थोपेडिक रोबोटिक तकनीक अब राजस्थान में पहली बार उपलब्ध होगी, जिससे जोड़ों के प्रतिस्थापन की प्रक्रिया और भी अधिक सटीक, कम दर्दनाक और तेजी से ठीक होने वाली बन गई है।

VELYS रोबोटिक प्रणाली के प्रमुख लाभ - अधिक सटीक सर्जरी - VELYS प्रणाली 3ष्ठ इमेजिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से मरीज के जोड़ों की विस्तृत डिजिटल मैपिंग करती है। इससे सर्जन को सटीक स्थिति, आकार और एलाइनमेंट का स्पष्ट ज्ञान मिलता है, जिससे गलतियों की संभावना लगभग शून्य हो जाती है।

कम दर्द और तेज रिकवरी - इस रोबोटिक प्रणाली के साथ की गई सर्जरी कम आक्रामक होती है, जिससे कम कट और कम रक्तस्राव होता है। इसका सीधा फायदा यह होता है कि मरीज को कम दर्द का सामना करना पड़ता है और रिकवरी भी तेजी से होती है।

प्रत्येक मरीज के लिए व्यक्तिगत इलाज - हर मरीज का शरीर अलग होता है, और ङ्कश्वरुङ्घस् प्रणाली हर मरीज की हड्डी की संरचना और जरूरतों के अनुसार उपचार को अनुकूलित करती है। इससे बेहतर फिटिंग, अधिक स्थिरता और दीर्घकालिक परिणाम सुनिश्चित होते हैं।

पारंपरिक तकनीकों की तुलना में बेहतर परिणाम - VELYS तकनीक पारंपरिक सर्जरी की तुलना में 80-90त्न अधिक सटीकता प्रदान करती है। यह न केवल सर्जरी के बाद की जटिलताओं को कम करती है, बल्कि मरीज के चलने-फिरने की क्षमता को भी तेजी से पुनर्स्थापित करती है।

डॉक्टरों के लिए आसान और प्रभावी तकनीक - धन्वंतरि अस्पताल के विशेषज्ञ आर्थोपेडिक सर्जन अब VELYS प्रणाली के जरिए सर्जरी को और अधिक आसान और कुशलता से कर सकेंगे। यह प्रणाली रियल-टाइम फीडबैक देती है, जिससे सर्जरी के दौरान किसी भी गलती की संभावना कम हो जाती है।

डॉ. ओजस सैनी के विचार- VELYS रोबोटिक प्रणाली से सर्जरी में सटीकता बढ़ती है और मरीज को जल्दी रिकवरी का लाभ मिलता है। यह नई तकनीक ऑर्थोपेडिक चिकित्सा में गेम-चेंजर साबित होगी।

धन्वंतरि अस्पताल के निदेशक डॉ. आर. पी. सैनी कहते हैं कि धन्वंतरि अस्पताल हमेशा उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाओं के लिए समर्पित रहा है। VELYS रोबोटिक प्रणाली के साथ, हम ऑर्थोपेडिक सर्जरी को अधिक कुशल, सुरक्षित और मरीजों के लिए आरामदायक बना रहे हैं। यह तकनीक जोड़ों के प्रतिस्थापन में एक नई क्रांति लाएगी।

संपर्क करें- डॉ. आर. पी. सैनी मो - 9829055760

धूम्रपान और शराब का सेवन आप की हृदय घात की जोखिम को बढ़ाते हैं रक्तचाप और मधुमेह हृदय की बीमारी को निमंत्रण देने में अहम भूमिका निभाते हैं।

समय-समय पर हृदय की जांच कराना जरुरी

डॉ सुनील जैन

एस एम एस मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर और प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर सुनील जैन का कहना है कि यदि आपको निम्नलिखित लक्षण दिखाई देते हैं तो इलाज में देरी नहीं करनी चाहिए जिनमें मुख्य हैं । सीने में दर्द व जलन होना, हाथ में, गर्दन में, जबड़े में दर्द, बाजू में दर्द, ठंडा पसीना आना, सांस भरना और थकान, जी मिचलाना, चक्कर आना आदि। धूम्रपान और शराब का सेवन आपकी हृदय घात की जोखिम को बढ़ाते हैं, रक्तचाप और मधुमेह हृदय की बीमारी को निमंत्रण देने में अहम भूमिका निभाते हैं। हृदय घात से कैसे बचें के बारे में उन्होने कहा कि अपनी तनाव व चिंता का प्रबंधन करें इसके लिए आप सक्रिय रहें और व्यायाम करें पौष्टिक आहार का सेवन और अनुशासन के साथ संयमित जीवनशैली अति आवश्यक है। इसका उपचार जीवन शैली में परिवर्तन लाने और हृदय पुनर्वास से लेकर

दवा, स्टेंट और बाईपास सर्जरी तक होता है। डिफिब्रिलेशन विधि में बिजली के झटके का उपयोग भी शामिल होता है। यह झटका तेजी से और अनियमित दिल की धड़कन को सही करने में मदद करता है और सामान्य दिल की लय को बहाल करने में भी मदद करता है। सांस की तकलीफ वाले लोगों को ऑक्सीजन थेरेपी प्रदान की जाती है। रोगी को सांस लेने में आसानी हो। अटैक का असर खत्म हो जाने के बाद, दवाएं भी निर्धारित की जाती हैं। इन दवाओं से थक्के को रोकने में मदद मिलती है और यह मौजूदा थक्कों को भी खतम कर देता है। इससे अटैक के खतरे भी कम होते हैं । उन्होने कहा कि दिल के मरीजों को ज्यादा चिकना व तेल मिर्च मसालों का भोजन नहीं करना चाहिए। हार्ट ब्लोकेज खोलने के लिए ब्लोकेज वाली धमनी में कैथेटर से जुड़ा एक छोटा गुब्बारा फुलाया जाता है ताकि यह धमनी को फिर से खोल सके, जिससे रक्त प्रवाह फिर से शुरू हो सके। एक छोटी, जाल ट्यूब यानि स्टेंट रखी जाती है जिसे रुकावट के स्थल पर लगा दिया जाता है। स्टेंट धमनी को फिर से बंद या अवरुद्ध होने से रोकता है।

सम्पर्क सूत्र - डॉ सुनील जैन मो 9414063035

यूटीआई का सटीक और शीघ्र इलाज अब संभव

नवीनतम तकनीक से शीघ्र यूरिन कल्चर रिपोर्ट मिलेगी, जिससे मिलेगा सही उपचार

पिछले कुछ वर्षों में अत्यधिक एंटीबायोटिक्स के उपयोग के कारण बीटा-लैक्टम एंटीबायोटिक्स ग्रुप की दवाएं भी अप्रभावी होती जा रही हैं।

हैल्थव्यू @ जयपुर

यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन एक आम लेकिन गंभीर समस्या बनती जा रही है। विशेष रूप से महिलाओं में इसका खतरा अधिक होता है क्योंकि उनकी यूरेथ्रा मलाशय के करीब होती है, जिससे बैक्टीरिया के संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। शोध बताते हैं कि महिलाओं में यूटीआई होने की संभावना पुरुषों की तुलना में 50 गुना अधिक होती है।

डॉ ए.के. भार्गव

यूटीआई के कारण और बढ़ती एंटीबायोटिक प्रतिरोधिता - यूटीआई के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन E.coli बैक्टीरिया इसका प्रमुख कारक है। पिछले कुछ वर्षों में अत्यधिक एंटीबायोटिक्स के उपयोग के कारण बीटा-लैक्टम एंटीबायोटिक्स ग्रुप की दवाएं भी अप्रभावी होती जा रही हैं। डॉ. ए. के. भार्गव, वरिष्ठ पैथोलॉजिस्ट, बताते हैं कि जब बैक्टीरिया एंटीबायोटिक्स के प्रति प्रतिरोधी हो जाते हैं, इससे विकल्प समाप्त हो जाते हैं, जिससे संक्रमण का उपचार कठिन हो जाता है।

यूरिन कल्चर रिपोर्ट में देरी - इलाज में एक बड़ी बाधा - सही एंटीबायोटिक के चयन के लिए यूरिन कल्चर रिपोर्ट आवश्यक होती है, लेकिन सामान्य परिस्थितियों में यह रिपोर्ट 48 घंटे में मिलती है, जिससे उपचार में देरी हो जाती है।

अब इलाज में क्रांतिकारी बदलाव - एडवांस उपकरण से शीघ्र रिपोर्ट - अब, नवीनतम डायग्नोस्टिक तकनीकों की मदद से यूरिन कल्चर की रिपोर्ट शीघ्र और सटीक रूप से उपलब्ध कराई जा सकती है। इससे चिकित्सक तुरंत सही एंटीबायोटिक का चयन कर सकते हैं, जिससे मरीज को जल्द राहत मिल सकती है। डॉ. भार्गव बताते हैं कि उनकी प्रयोगशालाओं में ऐसी उन्नत मशीनें उपलब्ध हैं, जो यूरिन कल्चर की रिपोर्ट बहुत कम समय में सटीक परिणामों के साथ प्रदान करती हैं। इससे पहले, देरी के कारण गलत एंटीबायोटिक्स देने की संभावना रहती थी, लेकिन अब इस समस्या का समाधान हो चुका है।

एंटीबायोटिक प्रतिरोध को रोकने की आवश्यकता -आज, एंटीबायोटिक्स का अत्यधिक और अनुचित उपयोग चिंता का विषय बन चुका है। शोध के अनुसार, एक-तिहाई सामान्य यूटीआई श्व. ष्शद्यद्ब बैक्टीरिया से होते हैं, और कई बार इस्तेमाल होने वाली प्रमुख दवा बैक्ट्रिम अब अप्रभावी हो रही है । न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, 20प्रतिशत अन्य यूटीआई संक्रमणों पर सामान्य रूप से दी जाने वाली पांच प्रमुख एंटीबायोटिक्स का कोई असर नहीं हो रहा। इसलिए, सटीक और शीघ्र निदान अत्यंत आवश्यक है ताकि सही दवा दी जा सके और एंटीबायोटिक प्रतिरोध को रोका जा सके।

शीघ्र जांच के लिए आधुनिक प्रयोगशालाएं उपलब्ध - यदि आपको यूटीआई से संबंधित कोई भी समस्या हो, तो नीचे दिए गए डायग्नोस्टिक सेंटरों पर संपर्क करें, जहां अत्याधुनिक उपकरणों की मदद से शीघ्र और सटीक जांच की सुविधा उपलब्ध है। यूटीआई के सही और शीघ्र इलाज के लिए उन्नत यूरिन कल्चर परीक्षण एक बड़ा कदम है। अब, सटीक रिपोर्ट समय पर उपलब्ध होने से सही एंटीबायोटिक तुरंत दी जा सकती है, जिससे मरीज जल्द स्वस्थ हो सकता है।

इसके अलावा, एंटीबायोटिक्स का विवेकपूर्ण उपयोग अत्यंत आवश्यक है, ताकि बैक्टीरिया के प्रतिरोध को रोका जा सके और भविष्य में प्रभावी उपचार सुनिश्चित किया जा सके।

संपर्क करें
डॉ. ए. के. भार्गव
मो- 9829079097
उन्नत डायग्नोस्टिक केंद्रों का पता
A.K. Diagnostic Centre & Research Laboratory
टोडरमल मार्ग, शंकर पथ, स्काउट हेड क्वार्टर के पास, बानी पार्क, जयपुर
0141-2202924, 2207924
A.K. Diagnostic & Physiorelief Centre
कान्हा प्लाज़ा, सब्ज़ी मंडी के सामने, जैन मंदिर गली, कालवाड़ रोड, झोटवाड़ा, जयपुर
0141-2349151
A.K. Diagnostic Centre
सुमंगल कॉम्प्लेक्स, कनवाटिया हॉस्पिटल के पास, शास्त्री नगर, जयपुर
0141-2300072

डर्माकॉन 2025

चिकित्सा नैतिकता, प्रेरणा और त्वचा विज्ञान की गहराई पर एक विचारोत्तेजक व्याख्यान

डॉ दिनेश माथुर

जयपुर 7 डर्माकॉन 2025 के उद्घाटन से पूर्व आयोजित 'आइस-ब्रेकिंग' सत्र में मुख्य वैज्ञानिक संयोजक डॉ. दिनेश माथुर ने एक प्रेरणादायक और विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया, जो चिकित्सा नैतिकता, त्वचा विज्ञान और प्रेरणा के विज्ञान पर केंद्रित था। इस अवसर पर डर्माकॉन 2025 के अध्यक्ष डॉ. मंजुनाथ शिनॉय, सचिव डॉ. भोमेश कट्टकम, आयोजन अध्यक्ष डॉ. यू.एस. अग्रवाल, आयोजन सचिव डॉ. दीपक माथुर सहित समस्त फैकल्टी सदस्य उपस्थित थे।

डॉ. दिनेश माथुर, जो जयपुर और भारत में एक प्रतिष्ठित त्वचा रोग विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं, ने अपने 50 वर्षों से अधिक के नैदानिक और शिक्षण अनुभव को साझा किया और चिकित्सा जगत के लिए कई महत्वपूर्ण संदेश दिए। उन्होंने चिकित्सा विज्ञान, नैतिकता और व्यक्तिगत विकास के आपसी संबंधों को उजागर करते हुए युवा चिकित्सकों और चिकित्सा पेशेवरों को ईमानदारी, सतत शिक्षा और करुणा के मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी।

प्रेरणा के वैज्ञानिक आधार पर गहन विश्लेषण - डॉ. माथुर ने प्रेरणा के वैज्ञानिक आधार को समझाते हुए बताया कि डोपामिन, सेरोटोनिन, ऑक्सीटोसिन और एंडोर्फिन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर हमारे जुनून, मानसिक मजबूती और मानवीय जुड़ाव को प्रभावित करते हैं। उन्होंने समझाया कि स्वस्थ भोजन, व्यायाम, सामाजिक संपर्क और शिक्षा से प्रेरणा को स्वाभाविक रूप से बढ़ाया जा सकता है और शराब व बाहरी उत्तेजनाओं की बजाय प्राकृतिक तरीकों को अपनाना आवश्यक है।

त्वचा - केवल शरीर की सतह नहीं, बल्कि भावनाओं का दर्पण - उन्होंने त्वचा को केवल शरीर की सतह के रूप में देखने के बजाय, उसे भावनाओं, जीवन के अनुभवों और संघर्षों का दर्पण मानने का संदेश दिया। झुर्रियों को उम्र का निशान नहीं, बल्कि अनुभव और संघर्ष की पहचान के रूप में स्वीकार करने की बात कही।

चिकित्सा केवल एक पेशा नहीं बल्कि चिकित्सा नैतिकता और डॉक्टर की जिम्मेदारी - डॉ. माथुर ने कहा, चिकित्सा केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक सेवा और आह्वान है। उन्होंने चिकित्सा में नैतिकता, सत्यनिष्ठा और विश्वास को डॉक्टर के लिए सबसे महत्वपूर्ण मूल्य बताया। उन्होंने रामायण के सुषेन वैद्य का उदाहरण देते हुए समझाया कि चिकित्सा सेवा में जाति, धर्म, मित्रता या शत्रुता का कोई स्थान नहीं होता, बल्कि चिकित्सक का कर्तव्य सबसे पहले आता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक सच्चे चिकित्सक की सफलता केवल व्यावसायिक लाभ में नहीं, बल्कि मरीजों की भलाई और सही शिक्षा देने में निहित होती है। मरीजों के आत्म-सम्मान की पुनर्स्थापना ही सच्ची चिकित्सा है।

उन्होंने युवा चिकित्सकों को प्रेरित किया कि चिकित्सा केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मरीजों के आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास को पुनः स्थापित करने की प्रक्रिया भी है। उन्होंने कहा, ÷सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक जीवनभर विद्यार्थी बने रहते हैं। चिकित्सा केवल रोगों का उपचार नहीं, बल्कि लोगों की भावनाओं और परेशानियों को समझकर उनके आत्म-सम्मान को बहाल करने की प्रक्रिया भी है।

संपर्क सूत्र डॉ. दिनेश माथुर मो - 9829061176

Vd. Tarun kumawat
BAMS MD. नाड़ी विज्ञान
अग्निकर्म, विद्धकर्म
पंचकर्म विशेषज्ञ
श्री विश्वध्वनि आयुर्वेदीय चिकित्सालय एवं पंचकर्म केन्द्र
मो. 7339843454, 9079092327
भारत पेट्रोल पम्प, हुण्डई शौरुम के सामने, जयपुर रोड चोमू , जयपुर

काबरा आई हॉस्पिटल
personalised care
COMPLETE EYE CARE
नेत्र रोगों का सम्पूर्ण इलाज
WOMEN & CHILD CARE
स्त्री रोगों एवं शिशुरोगों का सम्पूर्ण इलाज
*सुरक्षित प्रसव (नार्मल व सिजेरियन द्वारा)
*निसंतानता परामर्श व निवारण
*दूरबीन द्वारा बच्चेदानी व अण्डेदानी के समस्त ऑपरेशन
*पी.सी. ओ.डी. व हार्मोन संबधी परामर्श एवं निवारण
*बच्चो की नियमित ओ.पी.डी व टीकाकरण
NABH मान्यता प्राप्त हॉस्पिटल | R.G.H.S | चिरंजीवी मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
सी.जी.एच.एस. (CGHS) ई.सी. एच.एस.(CGHS) बी.एस.एन.एल. (CGHS)
जे.वी.वी.एन.एल. (JVVNL) अमूल सरस डेयरी
राजस्थान यूनिवर्सिटी एवं सभी टी.पी.ए व इंश्योरेंस कम्पनी
जमुना नगर, सोडाला, अजमेर रोड, जयपुर
फोन 9887469598, 9529888000

डायबीटिक फुट का क्या हो प्राथमिक उपचार

डॉ. रजनीश सक्सेना

राजस्थान के प्रसिद्ध डायबीटिक फुट स्पेशलिस्ट डॉ रजनीश सक्सेना का कहना है कि डायबीटिक फुट से बचने के लिए सही डायबीटिक कंट्रोल जरूरी है। इसके उपचार की प्रमुख चुनौती डायबीटिज को सही तरीके से कंट्रोल करना है। यह उपचार के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि अधिक ब्लड शुगर फुट के क्षेत्र में कष्टप्रद समस्याओं को बढ़ा सकता है।

विशेषज्ञ की सलाह लेने में बिल्कुल ना चूकें - डायबीटिक फुट के उपचार के लिए एक एंडोक्राइनोलॉजिस्ट या फुट केयर स्पेशियलिस्ट की सलाह लेना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रतिदिन अपने रक्त शुगर की निगरानी अति आवश्यक - रोजाना अपने रक्त शुगर की निगरानी रखें और उसे सामायिक रूप से मापें।

दर्द नियंत्रण - डायबीटिक फुट के दर्द को नियंत्रित करने के लिए डॉक्टर द्वारा सुझाए गए दर्द नियंत्रण उपायों का अनुसरण करें। डायबीटिक फुट के प्रभावित क्षेत्र को स्वच्छ रखें और उसे जरूरत अनुसार बैंडेज करें। बचाव के लिए सुरक्षा कदमों का अनुसरण करें, जैसे कि किसी भी चोट से बचने के लिए अच्छे जूते पहनना। यदि आपके डायबीटिक फुट का इलाज करने की आवश्यकता महसूस हो रही है तो देरी न करें, क्योंकि समय से पता लगाना महत्वपूर्ण है, देरी इस स्थिति को बिगाड़ सकती है।

अच्छा आहार ही लें - पौष्टिक स्वस्थ आहार का सेवन करें, जो रक्त शुगर को कंट्रोल में मदद कर सकता है और फुट की सेहत को बेहतर बना सकता है।

हमारी सलाह ये है कि आप अपने चिकित्सक से ज्यादा जानकारी प्राप्त करें और अपने फुट की सेहत के लिए सबसे अच्छा उपचार प्राप्त करने के लिए उनकी सलाह का पालन करें। यह उपाय डायबीटिक फुट के उपचार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात है कि आप एक चिकित्सक की सलाह लें और उनके दिशा निर्देशों का पालन करें।

संपर्क सूत्र - डॉ रजनीश सक्सेना मो 9829113522

परमार्थ एवं आध्यात्मिक समिति द्वारा एक शाम राम के नाम

परमार्थ एवं आध्यात्मिक समिति (रजि.) द्वारा आयोजित एक शाम राम के नाम कार्यक्रम भक्ति, वीरता और हास्य रस से सराबोर एक यादगार संध्या बनी। इस आयोजन का मंच संचालन समाजसेवी आर.के. अग्रवाल जी ने किया, जिन्होंने अपने प्रभावशाली शब्दों से कार्यक्रम को गरिमामय बनाया।

इस आयोजन में वीर रस के विश्वविख्यात कवि शशिकांत यादव मुख्य आकर्षण रहे। उनके साथ रमेश पांचाल जी ने प्रारंभिक कविताओं से मंच को ऊर्जावान बनाया। आयोजन में खींचा जी और ओम जी ने कवि शशिकांत यादव जी का माल्यार्पण कर सम्मान किया, वहीं नरेंद्र जी टॉक और जायसवाल जी ने रमेश पांचाल जी का अभिनंदन किया। संतोष जी और निर्मला जी ने भी कवि शशिकांत यादव का हृदय से स्वागत किया।

कवि शशिकांत यादव के ओजस्वी शब्दों में राम भक्ति और समाज पर तंज - कवि शशिकांत यादव ने कार्यक्रम की शुरुआत अपने गुरुदेव कोकिल साहब को नमन कर की। उन्होंने कविता को पढ़ना कठिन कार्य बताते हुए समाज में बदलते मूल्यों पर गहरा तंज कसा। उन्होंने कहा कि आज के युग में युवा रील बनाने में व्यस्त हैं, जिससे पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में गिरावट आई है। एक शाम राम के नाम सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति का उत्सव बन गया!

ACUPRESSURE
Health Care System
Mohan Ram Choudhary
Man.& Sellers - Acupressure, SU-JOK, Massager, Magnetic, Pyramid Vastu, Cupping Therapy, Acupuncture instruments & Books.
S-35,36 Subhash Nagar Shopping Center, Behind Petrol Pump, Near Hotel Ghoonghat, Shastir Nagar, Jaipur, Mob- 9314502577, 0141-2280664
Email : mohanramacu77@gmail.com

शादी दिलों का मेल है, उसे यादगार बनाइए
वैवाहिक परिधानों की सम्पूर्ण रेंज
Raja Sahab
His & Hers Store
Raja Park, Jaipur. Ph. : 2623001-002

Dr. Pushkar Gupta
MD (Med.), DM, DNB (Neuro)
Consultant
Neurologist
C.K. BIRLA Hospital
Resi : A-13, Jai Jawan-1, Tonk Road, Durgapura. Jaipur
Mo : 9828020015

Dr. DEEPAK VANGANI
Ms, Mch (Mumbai) Senior Consultant Neurosurgeon
Laser Endoscopy and Microneuro Surgery
NEURO SPINE CLINIC
L-24, Income Tax Colony, Tonk Road Durgapura, Jaipur
Mob 9829013398 www.vanganispinecare.com

Sparsh
स्पर्श हॉस्पिटल
चिरंजीवी एवं RGHS सुविधा के तहत निःशुल्क इलाज
सुविधाएं
• हृदय रोग विभाग
• स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग
• नाक, कान एवं गला रोग विभाग
• रेडियोलॉजी विभाग
• बाल एवं शिशु रोग विभाग
• यूरोलॉजी रोग विभाग
• दन्त रोग विभाग
• मेडिसिन विभाग
• जनरल सर्जरी विभाग
• हड्डी एवं जोड़ विभाग
• पेट एवं लीवर रोग विभाग
• फिजियोथेरेपी विभाग
ICU / NICU
24x7 आपातकालीन सेवाएं
ट्रॉमा एवं एन्जोग्राफी एन्जोप्लास्टी
आसीन्द नगर, न्यू सांगानेर रोड, सांगानेर, जयपुर फोनः-0140-2733348, मो. 8239038379

पाइल्स हॉस्पिटल
पाइल्स (बवासीर) व अन्य गुदारोगों का अस्पताल
A DAY CARE ANOREACTAL SURGERY CENTRE
डॉ. दिनेश शाह वरिष्ठ पाइल्स एवं गुदा रोग विशेषज्ञ M.S., FAIS, FIAGES, FACRSI
डॉ. अंशुल शाह मो. 8209632767
6/64, विद्याधर नगर, जयपुर
फोन - 0141-2334959

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रमन अग्रवाल द्वारा 170/ 3, रामगली राजापार्क के लिए जयपुर से प्रकाशित एवं मोहन शर्मा एंड कंपनी प्रा. लि., ए-10, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। सम्पादक : रमन अग्रवाल, सह सम्पादक - मीना अग्रवाल, 9829066272